14 वां दीक्षांत समारोह

बुधवार, 10 दिसंबर, 2025

अभिभाषण

डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय,
नौणी, सोलन-173230, हिमाचल प्रदेश

14वां दीक्षांत समारोह

माननीय कुलपति

प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल

द्वारा स्वागत भाषण एवं विश्वविद्यालय प्रतिवेदन

बुधवार, 10 दिसंबर, 2025

माननीय राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश एवं इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री शिव प्रताप शुक्ल जी, भारत सरकार के कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल के अध्यक्ष (ASRB) डॉ संजय कुमार जी, विश्वविद्यालय के सीनेट, प्रबन्धन बोर्ड, शैक्षणिक परिषद्, अनुसंधान और विस्तार परिषदों के सदस्य, माननीय राज्यपाल के सचिव, विश्वविद्यालय के वैधानिक अधिकारी, जिला प्रशासन, सम्माननीय मीडिया, विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष, कर्मचारीगण एवं छात्र वर्ग, उपाधि प्राप्तकर्ता, सभागार में उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथिगण एवं राजभवन व प्रदेश सरकार से आये अतिथिगण।

इस गौरवशाली अवसर पर मैं मंच पर विराजमान आप सभी का अभिनन्दन करता हूँ। यह दिन हमें न केवल अपने अतीत की उपलब्धियों का स्मरण करवाता है, बल्कि भविष्य की नई चुनौतियों एवं संभावनाओं के आकलन का भी संकल्प देता है। इसका श्रेय केवल इस संस्थान को ही नहीं, बल्कि उन सभी महानुभावों को भी जाता है जिन्होंने पिछले 40 वर्षों में इसका नेतृत्व किया और इस संस्थान को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने के लिए अथक प्रयास किया।

सर्वप्रथम, मैं इस विश्वविद्यालय के 14वें दीक्षांत समारोह के शुभ अवसर पर माननीय राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री शिव प्रताप शुक्ल जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और समय–समय पर मिलने वाले आपके मार्गदर्शन के लिए आभार भी प्रकट करता हूँ। भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल के अध्यक्ष (ASRB) डॉ संजय कुमार जी का आज इस समारोह में शामिल होने के लिए दिल की गहराइयों से स्वागत करता हूँ।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि वर्ष 1985 में स्थापित इस विश्वविद्यालय ने अभी अपने 40 वर्ष पूर्ण किए हैं। वैज्ञानिकों, छात्रों और कर्मचारियों के समर्पण एवं अथक प्रयासों, राज्य के बागवानी और .कृषि विभागों के सहयोग तथा किसानों के निरंतर संवाद के परिणामस्वरूप आज हिमाचल केवल अपने सुंदर परिदृश्यों और देवभूमि की पहचान से ही नहीं, बल्कि बागवानी और फल राज्य के रूप में भी अपनी अलग पहचान स्थापित कर चुका है।

इस शुभ अवसर पर मैं स्वर्गीय डॉ. यशवंत सिंह परमार जी, जिनके नाम पर यह विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था, का पूरे विश्वविद्यालय परिवार और समस्त हिमाचल वासियों की ओर से विनम्रतापूर्वक स्मरण करता हूँ। डॉ. परमार की दूरदर्शी सोच के कारण ही यह विश्वविद्यालय आज देश के पहाड़ी क्षेत्रों में बागवानी, फूलों,

फलों, औषधीय एवं सुगंधित पौधों तथा कृषि– बागवानी विस्तार के क्षेत्र में नेतृत्व कर रहा है।

विश्वविद्यालय के 14वें दीक्षांत समारोह के इस गरिमामय मंच से मैं आप सभी को हृदय से बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। आज हम सभी मिलकर संस्था की प्रगति और समृद्धि के प्रतीक अपने छात्रों की सफलता का उत्सव मना रहे हैं। आपकी यह उपलब्धि आपके कठोर परिश्रम, अनुशासन और प्रतिबद्धता का परिणाम है। विश्वविद्यालय ने आपको जो ज्ञान और कौशल प्रदान किए हैं, वे न केवल आपकी व्यक्तिगत उन्नति के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि प्रदेश, देश और समाज के विकास में भी अत्यंत अहम भूमिका निभाएंगे और भविष्य में नई राहें प्रशस्त करेंगे। विशेष रूप से कृषि, बागवानी, वानिकी और संबंधित क्षेत्रों में इस ज्ञान का उपयोग कर आप आज के किसानों और कृषि–क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान खोज सकते हैं।

आपका ज्ञान न केवल कृषि में सुधार ला सकता है, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध होगा। यदि हम कृषि उत्पादन, बागवानी, जल संरक्षण और वानिकी के क्षेत्रों में नवाचार की दिशा में एकजुट होकर प्रयास करें, तो हम न केवल अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बना सकते हैं, बल्कि एक स्वावलंबी और उन्नत राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

आज के दीक्षांत समारोह में 12 छात्रों को स्वर्णपदक और 518 को मेरीट सर्टिफिकेट दिए जायेंगे। इसके अलावा 855 छात्रों को B.Sc. औद्यानिकी एवं B.Sc. वानिकी, B.Tech. जैव–प्रौद्योगिकी, ABM, M.Sc. और Ph.D. की उपाधियां दी जाएँगी।

मैं आपसे अपेक्षा करता हूँ कि जो ज्ञान आपने यहाँ से प्राप्त किया है, वह आपका ही नहीं, बल्कि इस विश्वविद्यालय, आपके माता–पिता और अभिभावकों का भी नाम रोशन करेगा। यहां से शिक्षा लेने के उपरान्त सभी विद्यार्थियों से मेरी यही कामना है कि वह अपने ज्ञान, कौशल और अनुशासन के द्वारा देश की उन्नति में समुचित रूप से सहयोग करेंगे। आपकी यात्रा अभी शुरू हुई है, और इस यात्रा में हमेशा अपने उद्देश्यों –कृषि में सुधार, पर्यावरण की रक्षा और किसानों की समृद्धि को याद रखें।

अब मैं आपके समक्ष इस विश्वविद्यालय की उपलब्धियां प्रस्तुत करना चाहूँगा।

भारत सरकार द्वारा जारी NIRF रैंकिंग में हमारे विश्वविद्यालय को देश के कृषि विश्वविद्यालयों में 20वां स्थान हासिल हुआ। इसके अतिरिक्त University श्रेणी में विश्वविद्यालय को 101 से 150 बैंड और overall में 151 से 200 बैंड में स्थान मिला है। IIRF National Ranking में विश्वविद्यालय को Agriculture and Horticulture Category में देश भर में 11वां स्थान हासिल हुआ।

भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति माननीय श्री जगदीप धनखड़ जी ने 7 जून, 2025 को विश्वविद्यालय के छात्रों और कर्मचारियों को विकसित भारत युवा कृषि वैज्ञानिक दृष्टिकोण व संकल्प विषय पर संबोधित किया। उन्होंने किसानों, प्राकृतिक खेती

FPCs और विश्वविद्यालय की प्रदर्शनियों की भी सराहना की। माननीय उपराष्ट्रपति के विश्वविद्यालय दौरे के दौरान उन्होने विश्वविद्यालय के छात्रों को भारतीय संसद को देखने के लिए आमंत्रित किया। इसी कढ़ी में विश्वविद्यालय के पहले बैच को भारतीय संसद को देखने का सुनहरा अवसर मिला।

विश्वविद्यालय के वन उत्पाद विभाग के **Medicinal Aromatic Plants** और कीट विज्ञान विभाग **Biocontrol of Crop Pest AICRP** केंद्रों ने वर्ष 2024 के लिए सर्वश्रेष्ठ **ICAR** पुरस्कार जीता।

मैं **Entomological Society of India** का धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होने मुझे **Society** के **Life Fellow** के सम्मान से नवाज़ा। भारतीय प्राच्य विरासत संस्थान **(IIOH)**, कोलकाता द्वारा प्रतिष्ठित 'रवींद्रनाथ टैगोर स्मृति पुरस्कार' से मुझे सम्मानित किया।

वैज्ञानिकों और छात्रों ने देश भर में आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, कार्यशाला में पोस्टर और मौखिक प्रस्तुति अवार्ड जीतकर विश्वविद्यालय को गौरव प्रदान किया है। हमारे छात्रों ने देश की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाएं जैसे **NET, JRF, SRF** इत्यादि परीक्षाएं उत्तीर्ण की।

हमारे लिए बड़े गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और भूतपूर्व **PCCF HOFF** डॉ पवनेश कुमार को **HPPSC** के माननीय सदस्य के रूप में नामित किया गया है। श्री विनय कुमार, **IFS** को **ICFRE** देहारादून में **DDG (Admin)** के पद पर नियुक्त किया गया है। इसके अतिरिक्त **IFS** श्री पुरुषोत्तम धीमान मध्य प्रदेश में **PCCF** के रैंक पर पदोन्नत हुए हैं।

इस प्रतिष्ठित संस्थान के मुख्य परिसर एवं क्षेत्रीय अनुसंधान व कृषि विज्ञान केन्द्रों में किये गये शोध कार्यों से समय–समय पर बहुत सी तकनीकें व ज्ञान कृषक समुदाय को दिया गया है। हमारा प्रयास है कि बागवानी और वानिकी के शोध और नवाचार से प्रदेश और देश के किसानों (विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों) के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया जाए।

विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर वर्ष 2018 से शोध कार्य चल रहा है इसके अंतर्गत विभिन्न फसलों की उत्पादन विधि का मानकीकरण किया गया है। बहुपरतीय फल–फसल उत्पादन के लिए प्राकृतिक खेती पर आधारित मॉडल उद्यान मुख्य परिसर व 6 स्थानों पर विकसित किये गए हैं। विश्वविद्यालय ने सुभाष पालेकर प्राकृतिक कृषि सेब उत्पादन मॉडल भी विकसित किया है, जो सेब की खेती के लिए एक अभिनव दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रायोजित प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम और यूरोपीय संघ की सहयोग परियोजना **(ACROPICS)** जैसी पहल प्राकृतिक कृषि को स्थायी कृषि प्रथाओं के रूप में मज़बूती प्रदान कर रही हैं।

विश्वविद्यालय को विभिन्न वित्त पोषण एजेंसियों जैसे ICAR, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, बागवानी विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार, PK3Y से 17.06 करोड़ रुपये की 51 परियोजनाएँ स्वीकृत हुई हैं और लगभग 105.87 करोड़ रूपये की 178 परियोजनाएं विभिन्न संस्थाओं को वित्त पोषण के लिए प्रेषित की गई हैं।

7–8 अगस्त, 2025 को आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला में फलों, फूलों और औषधीय एवं सुगंधित पौधों पर 92 तकनीकों एवं किस्मों को पैकेज ऑफ प्रैक्टिस (POP) में शामिल किया गया।
प्राकृतिक खेती पर 63.65 लाख रुपये के कुल बजट के साथ 5 परियोजनाओं की स्वीकृति प्राप्त हुई है, जिसके अंतर्गत मुख्य परिसर नौणी, मशोबरा और नेरी में प्राकृतिक खेती के 3 मॉडल फार्म स्थापित किए गए एवं प्राकृतिक खेती को आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़ा गया।

हिमाचल प्रदेश में FPCs के माध्यम से प्राकृतिक खेती आधारित बीजों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए Bioversity इंटरनेशनल द्वारा 20,000 डॉलर की एक परियोजना को मंजूरी दी गई है।

विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न सरकारी और निजी संस्थानों, उद्योगों और विदेशी एजेंसियों के साथ 11 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

Carbonated Ready to serve Apple Drink की प्रौद्योगिकी के लिए Barita Agri-Business Limited को लाइसेंस दिया है। विश्वविद्यालय ने रोहड़ू की Himgiri Agri Solution के साथ एप्पल साइडर विनेगर के उत्पादन के लिए MoU पर हस्ताक्षर किए हैं।

रोमानियाई की University of Agronomic Sciences and Veterinary Medicine के साथ (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं।

विश्वविद्यालय ने Mahindra Summit Agriscience के साथ एक MoU किया है। इस साझेदारी का उद्देश्य बागवानी, वानिकी एवं संबंधित क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान, ज्ञान आदान–प्रदान और अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देना है। कृषि पारिस्थितिकी प्रथाओं को बढ़ावा देने और प्राकृतिक खेती तकनीकों को आगे बढ़ाने के लिए NCC Georgi व एकीकृत विकास परियोजना (HPIDP) सोलन, HimRRA, Dr Reddy's Foundation, मशरूम अनुसंधान निदेशालय और भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, पुणे आदि के साथ MOU हस्ताक्षरित किए गए।

राज्य सरकार द्वारा UHF और CSK Palampur को 3.68 करोड़ रुपये की भांग की खेती पर परियोजना स्वीकृत की गई है।

विश्वविद्यालय के लिए यह हर्ष का विषय है कि आईसीएआर (ICAR) द्वारा संचालित अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना के तहत विश्वविद्यालय को **AINP Cooperating Centre on Onion and Garlic** को मंजूरी मिली है।

विविधिकरण की दिशा में भी विश्वविद्यालय द्वारा कार्य किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत मोकोदामिया नट, अवोकाडो, ब्लूबैरी, ड्रैगन फ्रूट, ब्लैकबेरी, चाईनीज जुजबे, कॉफी आदि की 200 से अधिक नई किस्मों को मुख्य परिसर तथा विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों में रोपण किया गया एवं इनकी पैकेज ऑफ प्रेक्टिसिस भी तैयार की जा रही है।

हिमाचल प्रदेश के आर्द्र शीतोष्ण उच्च पर्वतीय क्षेत्र के लिए उपयुक्त मीठी चेरी की किस्मों जैसे कि ब्रैडबोर्न ब्लैक, सेलिसर, सीआईटीएच–14, डेसना और ग्लोरी को विश्वविद्यालय की फल फसलों की पैकेज प्रथाओं में शामिल किया गया।
हिमाचल प्रदेश में व्यावसायीकरण के लिए सेब में बेहतर बड म्यूटेंट का सर्वेक्षण और चयन 40 साल पुराने वेंस डिलिशियस पेड़ पर एक ठोस गहरे लाल रंग की त्वचा के बड म्यूटेंट को छोटे स्पर के रूप में देखा गया था। इसकी स्थिरता का परीक्षण करने के लिए स्पर को मातृ वृक्ष से अलग किया गया और M9 रूटस्टॉक पर ग्राफ्ट किया गया तथा इसे किस्म के रूप में विकसित करने का कार्य प्रगति पर है।

सेब की उच्च घनत्व वाली खेती के लिए अलग–अलग ट्रेनिंग सिस्टम पर शोध किया गया जिसमें सबसे अधिक उपज टॉल स्पिंडल सिस्टम (38.42 MT/h) में दर्ज की गई तथा इसे पैकेज ऑफ प्रैक्टिसिस में शामिल किया गया।

फ्रेंच बीन (पोल) की 'लक्ष्मी' और टेम्परेट कैरट की 'सोलन श्रेष्ठ' किस्मों को CVRC द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर रिलीज किया गया। सब्जियों की तीन किस्में Solan Shakti (शिमला मिर्च), Solan Advik (समर स्क्वैश), और Solan Adhiraj (भिंडी) को 2024 में कार्यशाला फसल उत्पादन पैकेज में शामिल किया गया।

गुलदाउदी की दो किस्में 'Solan Sheetla' और 'Solan Shoolini' और एल्स्ट्रोमेरिय की दो किस्में – 'Solan Gargi' और 'Solan Maitri' को AGM & AICRP में रिलीज के लिए प्रस्तावित किया गया।

विश्वविद्यालय के खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा 18 प्रक्रियात्मक प्रोटोकॉल/प्रौद्योगिकियाँ मानकीकृत की गयीं।

नई दिल्ली स्थित PPV&FRA ने सीबकथॉर्न की शिंगा, कमरू, दोरजय और ताशी किस्मों के लिए पंजीकरण प्रमाण पत्र प्रदान किया है।

विलो की डोडर–I नामक कृषक किस्म को PPV&FRA द्वारा पंजीकृत किया गया है।

इस अवधि के दौरान विश्वविद्यालय ने 6 पेटेंट प्रकाशित, 1 पेटेंट डिजाईन तथा 1 पेटेंट फाईल किया है।

औषधीय और सुगंधित पौधों जैसे कलिहारी, अकरकरा, चिरायता, जंगली गेंदा, जटामांसी की गुणवत्ता में सुधार के लिए 11 नई तकनीकों को भी पैकेज ऑफ प्रेक्टिसिस में शामिल किया गया है। कटाई–पश्चात प्रबंधन और फल प्रसंस्करण पर 10 नई तकनीकों को भी पैकेज ऑफ प्रेक्टिसिस में शामिल किया गया है।

पैकेज ऑफ प्रेक्टिस में स्थायी और लाभदायक सेब उत्पादन के लिए वर्ष भर प्राकृतिक कृषि पद्धतियों पर एक नया अध्याय शामिल किया गया है। इसके अलावा, प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के माध्यम से आड़ू, बेर और कीवी जैसी फल फसलों की उत्पादन तकनीकों को भी मंजूरी दी गई है। इसके साथ ही स्ट्रॉबेरी और गेंदा जैसी फसलों में प्राकृतिक कृषि इनपुट पर आधारित चार तकनीकों को भी मंजूरी दी गई है और उन्हें अभ्यास पैकेज में शामिल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग की **Pesticide Residue Lab** एवं मृदा विज्ञान एवं जल प्रबंधन विभाग की **Advanced Leaf & Soil Analysis Lab** को **NABL** द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई है।

इस विश्वविद्यालय की 4 वन नर्सरियाँ **Jachh, SAF** विभाग, नेरी, **SAF** विभाग, नौणी और **TIGR** विभाग, नौणी को **NNAC** द्वारा मान्यता प्राप्त हो चुकी है।

विश्वविद्यालय को चार नई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, जिसके अंतर्गत चार नई फसलों, अवोकाडो, ब्लूबेरी, मोकाडामिया नट और ड्रैगन फ्रूट, के विविधीकरण और अभ्यास पैकेज ऑफ प्रेक्टिस तैयार किए जाएँगे। ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए नेरी महाविद्यालय तथा क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, धौलाकुआं में ड्रैगन फ्रूट के जर्मप्लाज्म और साल में दो बार फूल प्राप्त करने के लिए गुलदाउदी की किस्म अर्ली व्हाईट लगाई गई हैं।

नेरी महाविद्यालय ने अवोकाडो की 3 किस्में – अर्काकुर्क रवि, अर्का सुप्रीम, टीडीके–1 तथा स्वीट ऑरेंज की एक किस्म को मूल्यांकन व गुणवत्ता जांचने के लिए लगाया है।

संरक्षित परिस्थितियों में विभिन्न बढ़ते मीडिया और अम्लीकरण व्यवस्थाओं के तहत प्रदर्शन (ब्लूबैरी) पर प्रायोगिक परीक्षण शुरू किए गए, और हिमाचल प्रदेश की उपोष्ण कटिबंधीय परिस्थितियों में कॉफी की खेती के लिए प्रथाओं का एक पैकेज विकसित किया गया। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने **ACROPICS** परियोजना के तहत **Romania** का दौरा किया और परियोजना के कार्यों पर परिचर्चा की।

इसके अतिरिक्त **INRAe France** से **Dr Annick Vignes, Director of Research and Professor** ने 06 सप्ताह के लिए हिमाचल व विश्वविद्यालय का दौरा किया तथा

यहां पर प्राकृतिक खेती पर विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे कार्यों के बारे में जाना। नेरी के एक छात्र को यूके के **Lincoln University** में लगभग ₹1.84 लाख प्रति माह की फेलोशिप मिली है और बीएससी (ऑनर्स) वानिकी के एक स्नातक छात्र को छात्रवृत्ति के साथ **AIT**, थाईलैंड में प्रवेश मिला है।

विश्वविद्यालय का **Ph D** छात्र विजय कुमार, जंगलों में आग पर शोध के लिए नौणी एवं वेस्ट्रन सीडनी विश्वविद्यालय के **Dual** डिग्री कार्यक्रम के तहत शोध कर रहा है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सेब उत्पादन क्षेत्रों का दौरा किया तथा बागानो में पत्ती धब्बा/ब्लाइट, कीट समस्याओं के साथ–साथ अन्य उत्पादन समस्याओं की व्यापकता का आकलन करके उन्हें प्रभावी रोग निदान उपाय सुझाए।

खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग में **Modular Solar Cold Storage Unit** को **GIZ** के सतत कृषि प्रणालियों एवं नीतियों पर वैश्विक कार्यक्रम (**AgSy**) के सहयोग से विकसित किया गया है।

कृषि वानिकी पर **AICRP** की वार्षिक समूह बैठक विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। फूलों की खेती पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (**AICRP**) की 33वीं वार्षिक समूह बैठक भी विश्वविद्यालय में **ICAR**-पुष्प अनुसंधान निदेशालय (डी.एफ.आर.), पुणे के सहयोग से आयोजित की गई।

सतत भविष्य के लिए स्वदेशी ज्ञान प्रणाली विकसित भारत–2047 का रोडमैप विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन थुनाग में बागवानी और वानिकी कॉलेज में किया गया जिसमें प्रमुख पर्यावरणीय चिंताओं और समाधानों पर चर्चा करने के लिए विशेषज्ञ और नीति निर्माताओं ने चर्चा की। इस कार्यक्रम में धर्मपुर, मंडी के माननीय विधायक श्री चंद्रशेखर, पतंजलि के मैनिजिंग डायरेक्टर आचार्य बालकृष्ण सहित 17 विश्वविद्यालयों, अनुसंधान स्टेशनों और चार राष्ट्रीय संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले 8 राज्यों के 132 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय में जलवायु लचीलेपन के लिए सब्जी फसलों के प्रजनन पर 21 दिवसीय उन्नत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन बागवानी (सब्जियाँ) में उन्नत संकाय प्रशिक्षण केंद्र द्वारा आयोजित किया गया जिसमें हरियाणा, राजस्थान, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, गुजरात और हिमाचल प्रदेश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों और संस्थानों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

खाद्य प्रणालियों को बदलने और कृषि पारिस्थितिकी–प्रणालीगत परिवर्तन के लिए एकीकरण पर उत्तरी क्षेत्र के लिए एक सहयोगी सम्मेलन विश्वविद्यालय में कंसोर्टियम फॉर एग्रो इकोलॉजिकल ट्रांसफॉर्मेशन (**CAT**)–नॉर्थ चैप्टर के सहयोग से आयोजित किया गया जिसमें देश भर के प्रतिभागियों ने भारत के कृषि पारिस्थितिकी तंत्र को बदलने के लिए एक साझा दृष्टिकोण और कार्रवाई योग्य

एजेंडा का सह–निर्माण पर चर्चा की। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध खाद्य नीति विशेषज्ञ श्री देविंदर शर्मा सहित विभिन्न नागरिक समाज संगठनों, शोधकर्ताओं, थिंक टैंक, फंडर्स और सरकारी निकायों के प्रतिभागियों के विविध समूह ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत प्राकृतिक खेती पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों, स्थानीय प्राकृतिक कृषि संस्थानों के प्रतिनिधियों और किसान मास्टर प्रशिक्षकों ने भाग लिया इस प्रशिक्षण में कुल 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें 13 किसान मास्टर प्रशिक्षक, स्थानीय प्राकृतिक कृषि संस्थानों के प्रतिनिधि और केवीके के आठ वैज्ञानिक शामिल थे।

विश्वविद्यालय में **NCOF Ghaziabad** के सहयोग से एक दिवसीय क्षेत्रीय प्राकृतिक खेती परामर्श और कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड, जम्मू और कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के 500 से अधिक किसान, वैज्ञानिक, कृषि उद्यमी और विभिन्न विभागों के अधिकारी शामिल हुए।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय ने **National Mission for Natural Farming** के अंतर्गत सोलन जिला की 100 कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षित किया।

अपनी **CSR** पहल के तहत यूको बैंक, नौणी ने शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के पास सार्वजनिक शौचालयों के निर्माण के लिए 7.06 लाख रुपये का सहयोग किया है।

जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में टिकाऊ पुष्प कृषि पद्धतियां और भूनिर्माण विषय पर 10 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में देशभर में वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं एवं कृषि विशेषज्ञों को पर्यावरण अनुकूल पुष्प विज्ञान एवं साज–सज्जा की टिकाऊ तकनीकों से प्रशिक्षित किया गया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्रों, अनुसंधान स्टेशनों और विभागों ने व्यापक किसान आउटरीच पहल में सक्रिय रूप से भाग लिया। टीमों ने हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों के गांवों का दौरा किया और किसानों से सीधे संपर्क कर उन्हें तकनीकी सहायता और मार्गदर्शन प्रदान किया। इस कार्यक्रम के अंर्तगत करीब 40 हजार किसानों तक पहुंचा गया।

'सिरमौर जिले में किसानों की आय बढ़ाने के लिए लहसुन बीज उत्पादन और मूल्य संवर्धन' विषय पर दो दिवसीय जिला स्तरीय संगोष्ठी विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। संगोष्ठी में सिरमौर जिले से 100 प्रगतिशील लहसुन उत्पादकों ने भाग लिया।

1975 में कृषि महाविद्यालय सोलन से स्नातक डिग्री हासिल करने वाले छात्रों की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय ने गोल्डन जुबली बैच के पूर्व छात्रों,

सेवानिवृत्त शिक्षकों एवं उनके परिवारों के लिए एक विशेष आयोजन किया। इस कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय एलुमनी एसोसिएशन द्वारा किया गया।

हरित क्रांति के जनक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन की शताब्दी जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा–बिहार के कुलाधिपति डॉ. पी. एल. गौतम मुख्य वक्ता रहे।

डॉ. यशवंत सिंह परमार की जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा चलाए गए वन महोत्सव अभियान का समापन किया गया। इस वर्ष वन महोत्सव के तहत 30 प्रजातियों के कुल 5771 पौधे रोपे गए।

विशिष्ट मशरूम की खेती, स्पॉन उत्पादन और मूल्य संवर्धन मशरूम उत्पादों पर कौशल संवर्धन तथा उद्यमिता विकास और प्राकृतिक खेती में स्नातक छात्रों के कौशल विकास पर ELP के दो नए मॉड्यूल को ICAR द्वारा 60 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई है।

विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण और प्लेसमेंट सेल द्वारा आयोजित नियमित सत्र और कैंपस प्लेसमेंट की मदद से कई छात्रों को निजी क्षेत्र की कम्पनियों में रोजगार मिला है।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 3,766 गतिविधियों में लगभग 89,344 लाभार्थियों (किसानों, छात्रों, अधिकारियों, हितधारकों, एफपीसी आदि) लाभान्वित हुए। कुल 494 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें 17,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पाँच में से चार कृषि विज्ञान केंद्रों (KVK) को CETARA प्रमाणन प्राप्त हुआ, जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र किन्नौर, कृषि विज्ञान केन्द्र चम्बा और कृषि विज्ञान केन्द्र शिमला को 3–स्टार रेटिंग प्राप्त हुई।

कृषि विज्ञान केन्द्र ताबो में स्थापित मॉडल खाद्य प्रसंस्करण इकाई को FSSAI के अंतर्गत रजिस्ट्रेशन नम्बर प्राप्त हुआ।

कृषि विज्ञान केन्द्र लाहौल स्पीति–II स्थित ताबो ने हर्लिंग गाँव के किसानों (अधिकतम 80%) का CETARA प्रमाणन किया।

प्राकृतिक खेती पर काम कर रहे किसानों और FPC के लिए Him SHIKHAR मोबाइल ऐप विकसित किया गया।

गुठलीदार फलों की लोकप्रियता और किसानों की आर्थिकी को बढ़ाने में इसकी आपार सम्भावना को देखते हुए विश्वविद्यालय ने नवम्बर माह में शिमला जिले के

थानेधार में **Stone Fruit Grower's Association** और बागवानी विभाग के साथ मिलकर **First National Stone Fruit Conclave** का आयोजन किया और प्रदेश में गुठलीदार फलों के भविष्य पर चर्चा की।

विश्वविद्यालय ने 01 दिसम्बर को अपना 41वां स्थापना दिवस मनाया, जिसमें प्रसिद्ध वैज्ञानिक–IIT कानपुर के भुतपूर्व विभागाध्यक्ष एवं स्व. श्री सत्यानंद स्टोक्स के पौत्र डॉ विजय स्टोक्स मुख्य वक्ता रहे।

विश्वविद्यालय के केवीके शिमला ने रोहड़ू में एक किसान मेला आयोजित किया, जिसमें स्थानीय विधायक श्री मोहन लाल बरागटा ने किसानों को सम्बोधित किया। इसके साथ–साथ कृषि विज्ञान केन्द्र किन्नौर ने 12,700 फीट की ऊँचाई पर स्थित मलिंग गांव में किसान मेला आयोजित किया और उच्च घनत्व सेब की खेती पर प्रदर्शन दिया।

विश्वविद्यालय ने छात्रों के साथ–साथ कर्मचारियों के लिए भी खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया, जिसमें सभी कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। विश्वविद्यालय की पांच टीमों ने विभिन्न खेलों और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लिया और प्रशासनिक ब्लॉक की टीम ने **Overall Trophy** अपने नाम की।

विश्वविद्यालय ने हॉल ही में छात्रों के लिये वार्षिक **Youth Fest** का आयोजन किया। इस आयोजन का उद्देश्य छात्रों को शिक्षा के साथ–साथ पाठ्यत्तर गतिविधियों में भी निपुण करना है, ताकि उनका सम्पूर्ण विकास हो सके। इस वर्ष बागवानी महाविद्यालय नौणी ने **Youth Fest** का खिताब अपने नाम किया।

राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड द्वारा वित्तपोषित परियोजना के तहत कृषि विश्वविद्यालय ने एक राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें देश के बागवानी आयुक्त डॉ प्रभात कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में मौनपालकों को सम्बोधित किया और मुल्य संवर्धन के विषय पर किसानों को जागरूक किया और प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने विश्वविद्यालय में एक **Honey Processing Unit** का भी उद्घाटन किया। इसी परियोजना के अंतर्गत किन्नौर जिला में भी जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता माननीय बागवानी मंत्री श्री जगत सिंह नेगी जी द्वारा की गई।

प्राकृतिक खेती मूहिम में विश्वविद्यालय को एक बड़ी सफलता इस वर्ष मिली जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र ताबो ने प्राकृतिक खेती विधि से उगाये गये सेब के बागीचों की अलग से नीलामी की गई और पहली बार यह बागीचा जिसमें विभिन्न किस्मों के 120 पौधे हैं, 9 लाख रूपये में बेचने की कामयाबी मिली।

नशे के विरुद्ध अभियान में विश्वविद्यालय द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किए गए ताकि युवाओं और समस्त समाज को इस सामाजिक बुराई के विरुद्ध एकजुट किया जा सके। इस कड़ी में विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र चंबा एवं रोहड़ू और क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र धौलाकुआँ में **ICAR ST Sub Plan** के तहत

किसान मेला एवं नशा उन्मुलन जागरूकता शिविर का आयोजन किया। इन सभी कार्यक्रमों में हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ल मुख्य अतिथि रहे। माननीय राज्यपाल ने स्कूली छात्रों की 'नशा विरोधी जन–जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान रैली में सैकड़ों स्कूली छात्रों ने भाग लिया। विश्वविद्यालय परिसर में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विश्वविद्यालय के NCC Cadets ने 1 एच. पी. गर्ल्स बैटालियन द्वारा बड़ूसाहिब में आयोजित Annual Training Camp में भाग लिया और विभिन्न प्रतियोगिताओं में बेहतरीन प्रदर्शन कर Best Institution Trophy विश्वविद्यालय के नाम की। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय ने Ranger and Rover के दो यूनिटस का National Portal पर पंजीकरण किया है।

विश्वविद्यालय के एक छात्र ने North Zone Inter University Wrestling Championship, 32 छात्रों ने North Zone Inter University Youth Festival और 12 छात्रों ने North Zone Inter University Kabbadi Championship में भाग लिया। इसके अतिरिक्त होली पर्व पर Harmony of the Pines का Concert, दो NCC camps, Inter College Sports Meet, Blood Donation Camp, Hostel Cleanliness Drive, Drug Abuse Awareness, Cultural Events का लगतार आयोजन किया जा रहा है।

इस वर्ष विभिन्न श्रेणियों के 89 पदों को पदोन्नति प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त सरकार की निति के अनुसार 80 कर्मचारियों को नियमित किया गया। 25 कर्मचारियों को Engagement के आधार पर नियुक्त किया गया। 08 कर्मचारियों को Limited Direct Recruitment नीति के तहत रखा गया।

जनवरी से अगस्त तक हिमाचल सरकार द्वारा 13 करोड़ का अतिरिक्त अनुदान जारी किया गया। वित्त वर्ष 2024–25 के लिए विश्वविद्यालय की आंतरिक आय 39.85 करोड़ तक पहुँच गई है। 28.33 करोड़ के 763 Advances Settle कर दिए गए हैं, जबकि 17 AG Audit Paras और 302 SAD ऑडिट Paras सैटल किए जा चुके हैं।

नेरी महाविद्यालय में 11.94 करोड़ की लागत से निर्मित होने वाले 50–50 की क्षमता वाले 2 Working Women Hostel और मुख्य परिसर में 6.65 करोड़ की लागत से 100 Capacity Working Women Hostel का निर्माण कार्य का वर्क अलोट हो गया है।

नेरी महाविद्यालय में PG ब्लॉक के First Floor का कार्य वर्तमान में प्रगति पर है और एक 3.10 करोड़ की लागत से निर्मित हो रहे Girls हॉस्टल का कार्य जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा।

मैं अपनी ओर से विश्वविद्यालय के सीनेट, प्रबन्धन बोर्ड, शैक्षणिक परिषद्, अनुसंधान और विस्तार परिषदों के सदस्यों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों व

छात्र–छात्राओं का भी इस कार्यक्रम की सफलता में उनके अथक प्रयासों हेतु धन्यवाद करता हूँ।

दीक्षांत समारोह हमारे लिए सदैव एक विशेष और महत्वपूर्ण अवसर होता है, जहाँ हम वर्षों की मेहनत, संघर्ष और अपने लक्ष्य की प्राप्ति की अनुभूति करते हैं। यह जीवन का वह सुनहरा पड़ाव है जो छोटे–छोटे कदमों से शुरू होकर हमें नई ऊँचाइयों तक ले जाता है। इस यात्रा में हम अनेक अनुभवों और चुनौतियों से गुजरते हैं, और यही अनुभव भविष्य में हमारा सबसे बड़ा आधार बनते हैं।

जब आप अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद विभिन्न संस्थानों और क्षेत्रों से जुड़ेंगे, तो एक बात हमेशा याद रखें कि उस संस्था की प्रतिष्ठा ही आपकी प्रतिष्ठा होती है। आपकी सफलता और प्रगति उस संस्था के मान–सम्मान को और ऊँचा उठाती है। इसलिए जहाँ भी जाएँ, वहाँ निष्ठा, ईमानदारी और मेहनत को अपनी पहचान बनाएं। किसी भी संस्था की असली पूँजी उसके छात्र होते हैं। जब छात्र उच्च पदों पर पहुँचकर समाज और देश की सेवा करते हैं, तो उनकी उपलब्धियाँ संस्था की उपलब्धियाँ बन जाती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आप सब इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के मानकों को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में अपना उत्कृष्ट सहयोग देते रहेंगे।

मैं सभी विद्यार्थियों से कहना चाहता हूँ कि जीवन में कुछ भी प्राप्त करने के लिए स्वयं को सदैव एक विद्यार्थी की तरह बनाए रखें, क्योंकि ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती। आप अच्छे इंसान बनें, क्योंकि एक अच्छा इंसान स्वस्थ समाज और समृद्ध भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आप सभी को हृदयपूर्वक अनेक–अनेक शुभकामनाएँ। मेरी आशा है कि आप अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे और इस विश्वविद्यालय का नाम गर्व से ऊँचा करेंगे।

मैं पुनः हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री शिवप्रताप शुक्ल जी, भारत सरकार के कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल के अध्यक्ष **(ASRB)** डॉ संजय कुमार, जिला प्रशासन, मीडिया के सदस्य एवं सभागार में उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथिगणों का यहां पधारकर उपाधि प्राप्तकर्ताओं को अपना आर्शीवाद एवं मार्ग दर्शन देने के लिए धन्यवाद करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आपका इस विश्वविद्यालय के प्रति स्नेह हमेशा बना रहेगा, जिससे हम सफलता के नित नये आयामों की ओर अग्रसर होते रहें। एक बार फिर से सभी स्वर्णपदक विजेता, उपाधि प्राप्तकर्ताओं व उनके अभिभावकों को विश्वविद्यालय की ओर से शुभकामनाएं। हम सभी आपके उज्जवल भविष्य की कामना कर परम् पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आपके माध्यम से विकसित भारत की यात्रा में यह विश्वविद्यालय भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

धन्यवाद।

जय हिन्द।

14वां दीक्षांत समारोह

बुधवार, 10 दिसंबर, 2025

डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय

'उद्बोधन' (Exhortation)

(कुलपति महोदय द्वारा)

मैं आप सब के लिए शुभ कामना करता हूँ कि आप जीवन के मंगलमय पथ पर अग्रसर होते रहें, सत्य और औचित्य का कभी त्याग न करें, सरल मार्ग को न चुनकर सन्मार्ग का अनुसरण करें। जब कभी विभिन्न कर्त्तव्यों में परस्पर संघर्ष हो तो आप उन कर्त्तव्यों को स्वीकार करें जो अधिकतम लोगों के लिए कल्याणकारी हों। स्वार्थ–भावना को जीवन की प्रेरक शक्ति न बनाएं, फल की लालसा से ईर्ष्या, द्वेष न करें।

परिश्रम और सत्कर्म में दूसरों से स्पर्ध करें, सबके साथ सहिष्णुता और धैर्य से व्यवहार करें।

आप अपने अध्ययन को निरन्तर बढ़ाते रहें और अपने अर्जित ज्ञान का प्रसार करते रहें।

अपनी विद्या और अपनी शक्ति का उपयोग कर 'सर्वजनहिताय' तथा 'सर्वजनसुखाय' करें। आप सदैव ऐसे कार्य करें जिनसे मनुष्यों को विभाजित करने वाली जाति, धर्म, देश और भाषा की दीवारें टूट जाएं, जिनसे आपको गौरव मिले, जिनसे आपके विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़े, जिनसे समस्त मानवता का कल्याण हो।

राष्ट्र के प्रति आपका नैतिक दायित्व है। राष्ट्र के सुख–दुख को अपना सुख–दुख समझें। अपने चरित्र और बुद्धि के विकास से राष्ट्र को समृद्ध और सुखी बनाएं।

मैं पुनः कामना करता हूँ कि आपकी शिक्षा आपको तेज प्रदान करे और शुभ प्रेरणा दे। जीवन के विकट संघर्ष में भी आपकी मान्यताएं और विश्वास अटल रहे। आपके भीतर का मानव सर्वदा जागरुक और जीवन्त बना रहे। मेरी शुभकामनाऐं सदैव आपके साथ हैं।

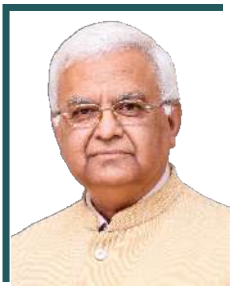

14th CONVOCATION ADDRESS

Dr. SANJAY KUMAR

Chairman, Agricultural Scientist Recruitment Board (ASRB), New Delhi

Wednesday, 10th December, 2025

His Excellency Governor of Himachal Pradesh and Chancellor of the University, Shri Shiv Pratap Shukla Ji, respected Vice-Chancellor Prof. Rajeshwar Singh Chandel Ji, Members of the Board of Management and Academic Council, Invited Guests, Faculty, Staff, my dear Students, Graduating Students, Proud Parents, Press and Media, Ladies and Gentlemen!

☞ This Convocation on 10th December, 2025 is a milestone in the life of this University and in the lives of each one of you. Today belongs to your achievements, your dedication and your journey. It is a day that celebrates learning, scientific curiosity, field experience and the spirit of service that defines horticulture, forestry and allied sciences.

☞ It is interesting and inspiring that your Convocation coincides with a date that the world also recognises for honouring human excellence. Every year on 10 December, Nobel Prizes in Physics, Chemistry, Medicine, Literature, Peace and Economic Sciences are awarded, commemorating the legacy of Alfred Nobel. While the Peace Prize is presented in Oslo and the others in Stockholm, what truly matters is the universal message behind them: that knowledge, when pursued with integrity and purpose, can transform societies.

☞ I extend my sincere gratitude to the Hon'ble Governor of Himachal Pradesh and Chancellor of the University for the opportunity to address the 14th Convocation of Dr. Yashwant Singh Parmar University of Horticulture and Forestry in Nauni, Solan. It is a great honour to be a part of this academic celebration.

☞ On this momentous occasion, I extend my heartfelt congratulations to the graduating students. Today, 840 of you will receive your degrees for your hard work and accomplishments. May your degrees and medals reflect your dedication and success. As students of a university that proudly carries the name of Dr. Yashwant Singh Parmar, you also carry his belief in self-reliance, sincerity and the power of educated youth to shape Himachal's future. Let his vision guide you as you move forward.

☞ Over the past three decades, this University has conferred degrees upon 9,296 students across its 13 previous convocations, shaping generations of

leaders in horticulture and forestry. With 3,129 students currently enrolled in its diverse programmes, the institution continues to thrive as a shining example of excellence.

- ☞ Dr. Yashwant Singh Parmar University of Horticulture and Forestry, Nauni, Solan, established on 1 December 1985, is Asia's first university exclusively devoted to horticulture and forestry. The University contributes directly to key Sustainable Development Goals such as SDG 1 No Poverty, SDG 2 Zero Hunger, SDG 3 Good Health and Well-being, SDG 4 Quality Education, SDG 6 Clean Water and Sanitation, SDG 13 Climate Action and SDG 15 Life on Land, and supports India's vision of Viksit Bharat@2047.
- ☞ It has released more than 150 improved varieties of fruits, vegetables, flowers and medicinal plants, including two national releases in 2024: temperate carrot Solan Shresth and French bean Lakshmi.
- ☞ It pioneered commercial kiwi cultivation in India. The first plantations in the 1970s and 80s were established by YSPUHF scientists.
- ☞ It played a key role in evaluating and popularising strawberry and hops cultivation in Himachal Pradesh through its research stations and KVK network.
- ☞ It maintains a field gene bank of temperate fruits and other germplasm at its research stations such as Mashobra, with a large collection enabling long-term conservation, breeding and development of improved cultivars adapted to Himalayan conditions.
- ☞ Horticulture and allied activities are vital for rural livelihoods in Himachal Pradesh. YSPUHF works closely with farmers through its wide network of Krishi Vigyan Kendras and regional research and training stations, including outreach to remote and tribal areas.
- ☞ The University is actively developing and transferring high-density planting systems and low-chilling apple varieties, rootstocks for rejuvenation of old orchards, anti-hail nets and sensor-based micro-irrigation, alternate high-value crops such as kiwi, hazelnut, walnut, persimmon and pomegranate, and protected cultivation technologies including polyhouses and low tunnels.
- ☞ YSPUHF promoted micro-irrigation systems save 60 to 70 per cent water and increase fruit yields by 30 to 50 per cent in orchards.
- ☞ The University operates drone and artificial intelligence laboratories and trains women farmers under the Namo Drone Didi scheme. Women perform over 80 percent of farm operations in Himachal's hills, and YSPUHF runs dedicated skill-development programmes in protected

cultivation, mushroom production and value addition to empower Horticulture Didis.

- Himachal Pradesh is estimated to lose 20 to 40 per cent of its horticultural produce post-harvest. YSPUHF is working on post-harvest management, value-addition training and improved storage practices to reduce these losses.

- The University promotes natural farming, zero-budget orchard management and integrated farming systems. Allied activities such as mushroom cultivation, apiculture and forestry-based enterprises are creating additional income avenues, especially for rural women.

- Startups and entrepreneurship should emerge strongly from these innovations, transforming science into sustainable agribusiness ventures that add value across the entire horticulture and forestry value chain—from production, post-harvest handling, processing, packaging, branding to global export.

- I wholeheartedly commend the Hon'ble Governor of Himachal Pradesh and Chancellor of this University, Shri Shiv Pratap Shukla Ji, for his exemplary leadership and guidance, which have contributed significantly to the success of this University.

- I acknowledge the outstanding leadership of the Honorable Vice-Chancellor, Prof. Rajeshwar Singh Chandel, and the exceptional contributions of the faculty members to this University.

- Their tireless efforts have resulted in significant advancements in education, research, innovation and technological development in the fields of horticulture, forestry and allied sciences. Under their stewardship, the University has achieved remarkable distinctions, including ranking 20^{th} among ICAR institutes in the NIRF 2025 rankings and securing the 3^{rd} position nationally in the ICAR Agricultural Research Services examinations.

- The Solan Centre of the All India Coordinated Research Project on Vegetable Crops was adjudged the Best Research Centre on Vegetable Crops in 2022, and more recently, the AICRP Centre on Biological Control of Crop Pests earned the Best Performing AICRP Centre Award for 2024 and 2025.

- Additionally, the Solan Centre for the AICRP on Medicinal and Aromatic Plants and Betelvine received the Best AICRP Center Award for 2024. Each year, scientists and students continue to garner prestigious awards and fellowships from leading institutions and organizations.

- Over the years, University scientists have excelled in identifying and developing high-yielding varieties of vegetables, flowers and fruits, immensely benefiting farmers across Himachal Pradesh. In an era of global collaborations, the University has forged strong tie-ups with institutions such as Western Sydney University, INRAe France, the Forest Research Institute (FRI) and many more.

- It has been instrumental in major projects, including the World Bank funded NAHEP-IDP, the Himachal Pradesh Horticulture Development Project and the ADB funded HP-SHIVA for subtropical areas.

- Currently, it leads initiatives like the Sustainable Natural System Platform in collaboration with NABARD and the Department of Agriculture, while partnering with the Prakritik Kheti Khushhal Kisan Yojna (PK3Y) for scientific validation of natural farming practices, development of NF models, establishment of a circular economy through the Sustainable Food Systems Platform for Natural Farming (SuSPNF), creation of a Farmer's self-declared certification mechanism (CETARA), and capacity building across states.

- As a pioneer in natural farming, the University is developing NF curricula for school children, undergraduate and postgraduate programs at the national level, and skill enhancement for extension personnel and KVK scientists from ICAR's ATARI zones. It also collaborates on the International Initiative for Agro-ecological Crop Protection with INRAe, France, and the EU's ACROPICS project.

- Furthermore, YSPUHF spearheads programs on climate change and climate-resilient agriculture, supporting sustainable livelihoods for smallholder farmers and serving as a resource centre for capacity building in other Himalayan states.

- It is with great pride that I share that about 14.7 per cent of Himachal Pradesh's Gross State Value Added (GSVA) in 2024 and 25 came from agriculture and allied sectors. Within the horticulture economy, apple cultivation contributes nearly 85 per cent of the total fruit output. Stone fruits such as peach, plum, apricot and cherry, along with emerging crops like kiwi, walnut and pomegranate, are steadily diversifying the state's horticultural basket.

- Off-season vegetables including tomato, capsicum, cauliflower and peas further strengthen the state's farming-based income, highlighting the transformative impact of institutions like this University.

In 2024-25, India's total horticulture production rose by 4 per cent to 369.05 million tonnes, surpassing foodgrain output once again. This includes 118.76 million tonnes of fruits, up 5.12 per cent, driven by

bananas, mangoes, watermelons, jackfruits, mandarins, papayas, and guavas; 215.68 million tonnes of vegetables, up 4.09 per cent, including onions at 30.78 million tonnes and potatoes at 58.11 million tonnes; spices at 12.50 million tonnes (garlic, ginger, turmeric); and aromatic and medicinal plants at 0.78 million tonnes. These figures underscore horticulture's role in driving India's agricultural GDP to over 33 per cent, supporting livelihoods for millions in emerging economies like ours.

☞ Yet, as we celebrate these numbers, let us reflect on the profound significance of agrobiodiversity, the genetic, species, and ecosystem diversity within agricultural landscapes that forms the bedrock of global food security.

☞ India, a mega-biodiverse nation harboring 8 per cent of the world's biodiversity on just 2.2 per cent of its land, conserves over 25 domesticated crops such as rice, eggplant, pigeon pea, citrus, banana, cucumber, and black gram, alongside 15,658 rice landraces, minor millets like ragi and jowar, pulses such as lentils, and 212 indigenous livestock breeds, including Tharparkar and Sahiwal cattle.

☞ However, intensification, monocultures, and climate change are eroding this invaluable genetic wealth, evident in the decline of traditional varieties like Pokkali rice in Kerala, local cardamom in Sikkim, and Kalanamak rice in Uttar Pradesh and Bihar.

☞ Preserving agrobiodiversity is essential for future resilience and value chain sustainability.

☞ Turning to forestry and agroforestry, crucial to agrobiodiversity, India faces pressing issues such as land degradation over 96 million hectares, deforestation from infrastructure, overgrazing, soil erosion, and biodiversity loss in hotspots like the Western Ghats and Eastern Himalayas.

☞ Agroforestry enhances soil health, carbon sequestration, nutrient cycling, and ecosystem resilience, but fragmented policies, inadequate investment, and unequal technology access limit its potential, reducing key ecosystem services such as pollination and water retention.

☞ Himachal Pradesh, with 68 per cent forest cover, highest in India outside the Northeast, exemplifies both strength and vulnerability. Climate change is shifting apple cultivation to higher altitudes, with rising temperatures and declining precipitation in Solan and Sirmaur, leading to phenological mismatches, emerging pests, and erratic yields.

☞ Agroforestry in HP, mixing fruit trees with fodder, timber, and nitrogen-fixing legumes, mitigates climate impact through improved soil fertility

and emissions reduction, yet urbanization and invasive species threaten soil and productivity.

What must we do?

- We should prioritise Government of India policies like the National Agroforestry Policy of 2014 promoting tree integration on farmlands for biodiversity and livelihoods, and the National Mission on Sustainable Agriculture focusing on climate-resilient practices.

- Expand community seed banks, such as Odisha's Koraput system conserving over 1,700 rice landraces, and adopt Payments for Agrobiodiversity Conservation Services rewarding farmers. In HP, invest in geospatial monitoring to map shifting cultivation zones and promote traditional agroecological systems like Karez irrigation analogs and Zabo water harvesting in Nagaland.

- Align with global conventions on biodiversity and plant genetic resources for equitable benefit-sharing. To tackle post-harvest losses of 20 to 40 percent, especially perishables, strengthen cold chains under the Agriculture Infrastructure Fund and leverage the Horticulture Cluster Development Programme to boost exports from the current 1 percent global share.

- Key missions to carry forward include the Mission for Integrated Development of Horticulture (MIDH), a central scheme with Rs. 11,293 crore outlay covering fruits, vegetables, spices, flowers, and medicinal plants, providing subsidies for high-density plantations, protected cultivation, and post-harvest infrastructure; the National Horticulture Mission (NHM) for holistic growth in 18 states; the Horticulture Mission for North East and Himalayan States (HMNEH), critical for HP's area expansion and value addition; the National Bamboo Mission for sustainable agroforestry; and the Clean Plant Programme with Rs. 1,766 crore funding for disease-free planting material.

- These missions must integrate digital tools under the India Digital Ecosystem of Agriculture (IDEA) for precision farming and market intelligence, addressing poor marketing, price fluctuations, and non-tariff export barriers.

- Himachal Pradesh exemplifies untapped potential in horticulture, especially with high-value crops like Heeng (asafoetida), worth Rs. 1000 crore in annual imports. Pioneering cultivation in Lahaul and Spiti's cold deserts since 2020 includes germplasm centers producing indigenous seeds via tissue culture, aiming for self-sufficiency and economic uplift for hill farmers.

- Himachal Pradesh sits on a treasure trove of biodiversity ready for global

branding. Beyond apples, its hills host indigenous superfoods like Hisalu (Golden Himalayan Raspberry), Kaafal (Himalayan Bayberry), Chulli (wild apricot rich in Vitamin E oil), Seabuckthorn, Kilmora/Berberis, Lingdi fern, and Pahadi rajmash; all rich in bioactive compounds for gourmet and nutraceutical markets.

- The "One Hill, One Fruit" vision guides this transformation: low hills (Kangra/Una) focus on Kinnow and wild pomegranate; mid-hills on Hisalu, Kaafal, Berberine; high mountains on Seabuckthorn, Chulli oil, Kala Zeera, Gucchi; cold deserts on iron-rich red rice and high-altitude herbs. Like global successes (almond's sweet mutation, peach's juicy genes, seedless banana), Himachal's forests hold superior variants waiting for scientific identification, tissue culture multiplication, and global branding.
- Apples remain vital, with production at 5.80 lakh tonnes in 2024, slightly down from 6.72 lakh tonnes in 2023 due to climate variability, but opportunities lie in breeding heat-tolerant strains like those from UHF. Pears and stone fruits like plums, apricots, and cherries yield around 1.2 lakh tonnes annually across 6,399 hectares for pears alone, with potential for value-added products like jams, juices, and exports via GI tags.
- Mushroom cultivation in Himachal Pradesh is expanding through controlled-environment units, contributing to India's annual output of about 3.3 lakh tonnes, with strong potential in high-value edible varieties such as oyster, shiitake, and the prized Morchella.
- In parallel, interest is rising in the medicinal caterpillar fungus Ophiocordyceps sinensis, which represents a specialised high-value niche. Medicinal and Aromatic Plants like lavender, rosemary, seabuckthorn, and ashwagandha are also gaining ground.
- While area estimates vary, essential-oil processing and branding offer significant value-addition opportunities. Premium oils such as Bulgarian rose oil typically fetch USD 5,000–6,000 per kg, indicating the niche markets that high-quality Himalayan products can aspire to.
- Integrating One Health approaches linking human, animal, and environmental health, HP's MAPs, mushrooms, and agroforestry enterprises help combat zoonotic risks while promoting sustainable wellness products like seabuckthorn-based nutraceuticals.
- Diversify beyond monocultures in apples and pears by mixing millets, pulses, and legumes to enhance drought and flood resilience, while improving soil health through biological nitrogen fixation.

Dear Graduates,

- France converted mere hectares of jasmine and rose in Grasse into luxury brands worth billions; the Netherlands transformed tulip bulbs into a billion-euro industry with global reach; Bulgaria sells "liquid gold" rose oil at a premium prize; countries like Colombia, Kenya, Ethiopia and others have built cold chains and brands that dominate flower exports.

- India grows more jasmine, rose, marigold and tuberose than most combined and Kannauj has a 400-year-old attar distillation tradition. Yet our flower exports reached just Rs. 717.83 crores in 2023-24 because petals travel in baskets and processing units are missing. We must close this gap of vision, scale, and branding.

- earthquake-proof building material and luxury furniture; fungi and pineapple waste transformed into vegan leather; Thailand turning cassava to bioethanol.

- India, the largest natural bamboo treasury, must add value and branding rather than export raw material. We import simple bamboo sticks for incense despite rich raw abundance.

- You are the generation that will build Indian brands and factories that process raw materials into remarkable products spanning horticulture, floriculture, agroforestry, biofuels, bioplastics, and nutraceuticals. The future belongs to those who add value, science, and pride across the entire value chain.

- India's bioeconomy can accelerate rapidly through startups that innovate in crop production, processing, packaging, branding and global marketing, supported by the new BioE3 Policy promoting biomanufacturing, green materials and climate-resilient agriculture.

- For Himachal, this opens opportunities to convert local biomass and high-value crops into bio-based products, while nationally BioE3 can enable future ventures such as PLA, PHA and other biopolymer industries that replace petroleum plastics with sustainable alternatives.

- Brazil turned sugarcane fields into the world's largest biopolymer factory; Chile wrote circular-economy laws pushing bioplastics. The U.S. built nature-based polymers; Europe banned single-use plastics.

- India produces vast quantities of sugarcane, maize, cassava, hemp, and agricultural residues, yet most biodegradable bags are imported while much biomass remains underutilized. Harnessing this biomass for domestic bioplastics and value-added products is a clear opportunity.

- You will build bioplastic plants, green polyethylene factories, hemp-

composite units, and biofuel distilleries. You will produce eco-friendly carry bags, water bottles, and car dashboards grown from Indian crops.

- The world is advancing a new green revolution, and India can lead it from the Himalayas. In Himachal Pradesh, high-altitude algae cultivation and controlled microalgae ponds could yield bio-oils and nutraceuticals while absorbing carbon. Horticulture residues, sugarcane by-products, and agricultural biomass can be converted into biofuels and bioplastics, helping achieve energy and environmental sustainability in the state.

- As you step into this world, remember: agrobiodiversity is your inheritance, climate resilience your mission, and innovation your tool. Carry UHF's legacy forward, champion missions like MIDH, NHM, and the BioE3 Policy, and transform challenges into opportunities for crops such as heeng and apples.
- I wish you all a future filled with achievements, happiness and the opportunity to positively impact millions through sustainable temperate horticulture, innovative forestry and eco-friendly practices that make Himachal the global fruit bowl it is destined to be.

- As you embark on your journey as graduates of Dr. Yashwant Singh Parmar University of Horticulture and Forestry, remember the words of Bharat Ratna and renowned agricultural scientist Dr. M. S. Swaminathan. He said that "we need a new vision for agriculture to spread happiness among farm and rural families. Bio-happiness through the conversion of our bio-resources into wealth meaningful to our rural families should be the goal of our national policy."

Good luck.
Jai Himachal Pradesh,
Jai Bharat

14वां दीक्षांत समारोह

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति

श्री शिव प्रताप शुक्ल

का अभिभाषण

बुधवार, 10 दिसंबर, 2025

भारतीय कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल, भारत सरकार के अध्यक्ष डॉ संजय कुमार जी, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चन्देल, विश्वविद्यालय सीनेट, प्रबन्धन बोर्ड व शैक्षणिक परिषद् के सदस्यगण, वैधानिक अधिकारी, कर्मचारी वर्ग, विद्यार्थी समुदाय, स्नातक व स्नातकोत्तर उपाधिधारक तथा उनके अभिभावक, जिला प्रशासन के अधिकारीगण, पत्रकार बंधुवर व सभागार में उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथिगण।

सर्वप्रथम मैं, विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग, विद्यार्थी समुदाय एवं प्रदेश के किसानों और बागवानों को विश्वविद्यालय के 14वें दीक्षांत समारोह की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। आप सभी के अथक प्रयासों के नतीजतन आज यह विश्वविद्यालय विश्व पटल पर अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल हुआ है। मैं यहां पर उपस्थित सभी स्वर्ण पदक विजेताओं और उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को बहुत—बहुत बधाई देता हूँ और आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

आज का यह दिन आप सभी के जीवन का एक बेहद यादगार और स्वर्णिम अध्याय है। अपनी—अपनी उपाधियाँ प्राप्त करके आप केवल एक शैक्षणिक यात्रा का समापन नहीं कर रहे हैं, बल्कि राष्ट्र और कृषक समुदाय की सेवा के एक नए पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से प्राप्त उच्च शिक्षा और विशेषज्ञता को केवल अपनी व्यक्तिगत प्रगति तक ही सीमित नहीं रखेंगे, बल्कि इसका उपयोग किसानों और बागवानों के साथ समाजिक जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए करेंगे। इस शुभ अवसर पर मैं उन सभी सम्मानित अभिभावकों और समर्पित शिक्षकों को भी हृदय से बधाई और धन्यवाद देता हूँ जिनके अथक त्याग और प्रयासों के बिना आपकी यह सफलता संभव नहीं हो पाती। आपकी उपलब्धि उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

दीक्षांत समारोह को केवल एक स्मृतिक्षण के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह वास्तव में एक पवित्र संस्करण है जो आपको शिक्षण संस्थान के अमूल्य और चिरस्थायी योगदान का बोध कराता है। तथा भविष्य में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हेतु आपके संकल्प को जागृत करता है। आपके शैक्षणिक कार्यकाल के दौरान आपको उत्कृष्ट अनुसंधान एवं अत्यधुनिक प्रौद्योगिकीय नवाचारों का सूक्ष्म अवलोकन करने का अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुमूल्य सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरा आप सभी से यह आग्रह और अपेक्षा है कि आप इन शोध कार्यों और तकनीकों को प्रयोगशालाओं से निकालकर, पूर्ण समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा के साथ वास्तविक रूप से हमारे कृषक

समुदाय तक पहुँचाने के अपने दायित्व का निर्वहन करें। आप ही वह सेतु हैं जो ज्ञान को उसके उचित प्राप्तकर्ता तक ले जाएेगें। किसान–बागवानों की चुनौतियों को पहचानना और समय पर उनका समाधान करना आपका सर्वोच्च कर्तव्य होना चाहिए।

विश्वविद्यालय ने प्रदेश में फलोत्पादन में विविधता हेतु ड्रैगन फ्रूट, अवोकाडो, ब्लूबैरी, मोकाडामिया नट, चाईनीज जुजुबे तथा कॉफी की खेती की शुरूआत की है। एवोकेडो ने आशाजनक परिणाम दिखाए हैं, इसी प्रकार ब्लूबैरी, मोकाडामिया नट व ड्रैगन फ्रूट भी लाभदायक फसलें साबित हो रही हैं।

यह आवश्यक है कि सेब सहित अन्य फसलों को रोगों और कीटों से बचाने के लिए किसानों की रसायनो पर अत्यधिक निर्भरता को कम किया जाए जिनसे हमारी मिट्टी, जल और समग्र भोजन श्रृंखला पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। अतः इस विषय पर गंभीरता से विचार करते हुए किसान–बागवानों में प्राकृतिक खेती की तकनीकों को वैज्ञानिक पहलुओं के साथ लोकप्रिय बनाने में अपने प्रयासों को और बढ़ाऐं।

आज के इस दीक्षांत समारोह में 12 छात्रों को स्वर्ण पदक और 518 को मेरीट सर्टिफिकेट दिए गए हैं। इसके अलावा 855 छात्रों को बी.एस.सी. औद्यानिकी एवं बी.एस.सी. वानिकीए बी.टेक जैव–प्रौद्योगिकी, ए.बी.एम., एम.एस.सी. और पी. एच.डी. औद्यानिकी एवं वानिकी की उपाधियां दी गई है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि 12 स्वर्ण पदकों में से 09 स्वर्ण पदक हमारी विदुषी छात्राओं ने प्राप्त किए हैं। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि शैक्षणिक जगत में छात्राओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। यह एक अत्युत्तम संकेत है, क्योंकि कृषि, बागवानी एवं वानिकी क्षेत्रों में महिला शक्ति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक है।

मुझे यह बताते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है कि विश्वविद्यालय के वन उत्पाद विभाग के औषधीय एवं सुगंधित पौधों और फसल कीटों के जैविक नियंत्रण AICRP केंद्रों में वर्ष 2024 के लिए देशभर में सर्वश्रेष्ठ ICAR पुरस्कार जीता। NIRF National Ranking में विश्वविद्यालय को कृषि और बागवानी श्रेणी में देश भर में 20वां स्थान तथा IIRF Ranking में 11वां स्थान हासिल हुआ। यह विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत गौरव का विषय है कि हमारे वैज्ञानिक और छात्रों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आयोजित सम्मेलनों में पुरस्कार प्राप्त कर संस्थान को गौरवान्वित किया है। हमारे छात्रों ने NET, JRF, SRF जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ–साथ, कृषि अनुसंधान सेवा जैसी कठिन परीक्षाएँ सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की हैं। इसके अतिरिक्त, हमारे पूर्व छात्र और पूर्व PCCF (हेड ऑफ फॉरेस्ट फोर्स), डॉ. पवनेश कुमार को HPPSC (हिमाचल प्रदेश पब्लिक सर्विस कमीशन) में सदस्य के रूप में नामित किया जाना, जो हमारे लिए अभूतपूर्व सम्मान की बात है। राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC), राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) तथा स्काउट्स एवं गाइड्स विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करते हैं। विश्वविद्यालय में सभी छात्र अनुभवात्मक शिक्षण के माध्यम से युवा टीमवर्क, ईमानदारी, नागरिक चेतना और राष्ट्र सेवा के प्रति समर्पण जैसे गुणों का विकास करते हैं। हाल ही में, विश्वविद्यालय की NCC कैडेट पारूल

सैनी का चयन भारतीय वायु सेना में बतौर "फ्लाइंग ऑफिसर" हुआ है जो विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता और छात्रों की राष्ट्र सेवा की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सामुदायिक सेवा, आपदा प्रबंधन गतिविधियों, पर्यावरण अभियान तथा क्षमता–विकास कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी संवेदनशीलता और स्वयंसेवा की भावना को आत्मसात करते हैं, जो उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं। इन मूल्य–आधारित पहलों को उच्च शिक्षा से जोड़कर विश्वविद्यालय जिम्मेदार, आत्मविश्वासी और सेवा–भावना से युक्त ऐसे नागरिक तैयार कर पाते हैं, जो समाज और राष्ट्र के निर्माण में सार्थक योगदान दे सकें।

इसके अलावा, विश्वविद्यालय के बहुत से छात्र अपना खुद का उद्यम लगाकर दूसरे लोगों को रोजगार के साधन उपलब्ध करवा रहे हैं। इस पहल से हमारे छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान और उद्योगों के साथ विश्वविद्यालय का सहयोग बढ़ेगा। मैं आशा करूंगा की आप में से भी बहुत से छात्र उद्यमिता के इस मार्ग को अपनाएंगे और रोजगार प्रदाता बन हमारे युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बनेगें।

विश्वविद्यालय पिछले 5–6 वर्षों से प्राकृतिक खेती पर व्यापक शोध कर रहा है, जिसके तहत बहुपरतीय फल–फसल उत्पादन के लिए मॉडल फार्म विकसित किए गए हैं और प्राकृतिक कृषि सेब उत्पादन मॉडल जैसा अभिनव दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। ICAR और यूरोपीय संघ (ACROPICS) के सहयोग से इन स्थायी कृषि प्रथाओं को मजबूती मिल रही है। हमारे लिए यह हर्ष का विषय है कि गत वर्ष अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, विश्वविद्यालय ने 10.35 करोड रुपये की 33 परियोजनाएँ विभिन्न एजेंसियों से प्राप्त की हैं, जिनमें प्राकृतिक खेती हेतु 63.65 लाख रुपये की 5 परियोजनाएँ शामिल हैं। Bioversity International के $20,000 के अनुदान से किसान उत्पादक कम्पनी (FPCs) के माध्यम से प्राकृतिक खेती आधारित समुदाय–आधारित बीज बैंक स्थापित किए जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय ने विभिन्न सरकारी, निजी संस्थानों और विदेशी एजेंसियों के साथ 11 समझौता ज्ञापनों (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं, जो ज्ञान और नवाचार के त्वरित हस्तांतरण को सुनिश्चित करते हैं, जिससे विश्वविद्यालय को अनुसंधान और विकास में अग्रणी भूमिका निभाने में सहायता मिलेगी। इसमें रोमानिया की यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रोनॉमिक साइंसेज एंड वेटरनरी मेडिसिन ऑफ बुखारेस्ट (University of Agronomic Sciences and Veterinary Medicine of Bucharest, Romania) नट्स कल्टीवेशन कंपनी जॉर्जिया (Nuts Cultivation Company, Georgia), एकीकृत विकास परियोजना (HPIDP), मशरूम अनुसंधान निदेशालय (Directorate of Mushroom Research), भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (Indian Meterological Department), पुणे, महिंद्रा समिट एग्रीसाइंस (Mahindra Summit Agriscience), हिंदुस्तान इंसेक्टिसाइड लिमिटेड (Hindustan Insecticides Limited), हिमाचल प्रदेश रीवाइटलाइजिंग रेनफेड एग्रीकल्चर नेटवर्क (Himachal Pradesh Revitalising Rainfed Agriculture; HimRRA) और डॉ रेड्डीज फाउंडेशन इत्यादि कुछ मुख्य संस्थाएं शामिल हैं।

हमारे लिए यह गर्व और हर्ष का विषय है कि गत वर्ष में हमारे विश्वविद्यालय ने शोध और नवाचार के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धियाँ दर्ज की हैं। हमारे समर्पित वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप, हमने अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में 334 से अधिक उत्कृष्ट शोध पत्रों का प्रकाशन किया है। इन प्रकाशनों में से 101 पत्र ऐसे हैं जिनकी NAAS रेटिंग 8 से अधिक है, जो हमारे शोध की विश्व स्तरीय गुणवत्ता को प्रमाणित करता है। इसके अतिरिक्त, उच्चतम स्तरीय शोध मानकों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के चलते, मुझे यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि पिछले एक वर्ष में विश्वविद्यालय द्वारा 08 महत्वपूर्ण पेटेंट प्रकाषित किए गए हैं। यह शानदार प्रदर्शन न केवल हमारे शोधकर्ताओं की प्रतिभा को दर्शाता है, बल्कि उच्च शिक्षा और ज्ञान सृजन के केंद्र के रूप में विश्वविद्यालय की बढ़ती वैश्विक पहचान को भी मज़बूत करता है।

हाल ही में विश्वविद्यालय ने हिमाचल प्रदेश उद्यान विभाग के सहयोग से आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला के आठवें संस्करण में फलों, फूलों, औषधीय और सुगंधित पौधों के लिए पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेस (POP) की महत्वपूर्ण कार्यशाला की गई है। इस कार्यशाला में कुल 92 नई सिफारिशें पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज (POP) में शामिल की गई। खुमानी, चेरी, बेर, गुलदाउदी और एल्स्ट्रोमेरिया जैसी फसलों की 16 नई किस्में किसानों के लिए दी गई हैं। सबसे महत्वपूर्ण रूप से, इस में स्थायी सेब उत्पादन हेतु प्राकृतिक कृषि पद्धतियों पर एक नया अध्याय जोड़ा गया है, साथ ही आड़ू, बेर, कीवी, स्ट्रॉबेरी और गेंदा जैसी फसलों के लिए प्राकृतिक कृषि तकनीकों को भी मंजूरी दी गई है। गुठलीदार फलों को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेश की फल उत्पादन संस्था (FPO)के साथ मिलकर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन भी प्रशंसनीय है।

प्यारे छात्रों, मैंने समाज में पनप रहे नशे के विरूद्ध एक राज्यव्यापी नशामुक्त अभियान चलाया है। इस अभियान में, मैं समाज के हर वर्ग विशेषतः युवाओं की सक्रिय भागीदारिता सुनिश्चित करना चाहता हूँ ताकि बढ़ती नशे की लत से इस प्रदेश को मुक्त किया जा सके। यह पहल जागरूकता, शिक्षा, और सरकारी–सामुदायिक सहयोग के बहु–स्तरीय दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका अंतिम लक्ष्य सरकार, शिक्षण संस्थानों, परिवारों और स्थानीय संगठनों के सामूहिक प्रयासों से हिमाचल प्रदेश में एक स्थायी नशामुक्त वातावरण स्थापित करना है। आप सभी स्नातक इस अभियान के सबसे शिक्षित और प्रभावी स्वयंसेवक हैं। आपका समर्पण इस लक्ष्य को साकार करने में निर्णायक भूमिका निभाएगा। अतः मैं आप सभी से यह आग्रह करता हूँ कि आप इस वैज्ञानिक ज्ञान और नैतिक चेतना का उपयोग करते हुए, समाज की सबसे बड़ी चुनौती, यानी नशे की लत, से लड़ने में अपना सक्रीय योगदान सुनिश्चित करें।

विश्वविद्यालय इस पहल में एक अग्रणी भूमिका निभा रहा है जो की हर्ष का विषय है। इसी कड़ी में गत वर्ष धौलाकुआं, चम्बा एवं रोहड़ू में किसान मेला और नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इन कार्यक्रमों में लगभग 50 स्थानीय पंचायतों के नागरिक तथा स्थानीय स्कूल, कॉलेज एवं अन्य संस्थानों के हजारों–हजारों बच्चों की भागीदारिता ने हमारी इस लड़ाई को और मजबूती

प्रदान करने का काम किया है।

अंत में, मैं विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों, वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों को साधुवाद देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में भी आप सभी इसी समर्पण भाव से प्रदेश के अन्नदाताओं, हमारे किसानों और बागवानों की सेवा में अडिग रहेंगे और उनके जीवन में समृद्धि लाते रहेंगे।

आज उपाधि प्राप्त करने वाले आप सभी छात्र–छात्राओं और स्वर्ण पदक विजेताओं से मेरा विशेष आग्रह है कि यह मात्र एक उपाधि नहीं, यह समाज, राज्य और राष्ट्र के प्रति आपकी एक पवित्र भूमिका का आरंभ है। इस भूमिका को आपको पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निभाना होगा। एक सशक्त और संवेदनशील समाज के निर्माण के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हमारी युवा पीढ़ी के हृदय में करुणा, दया, सद्भावना और राष्ट्र के प्रति अटूट भक्ति की भावना निरंतर प्रज्वलित रहे।

यह क्षण याद रखिएगा! आज से आप सभी इस महान विश्वविद्यालय के सच्चे राजदूत (**Ambassadors**) हैं। आपके प्रत्येक कार्य और निर्णय के साथ इस संस्थान की प्रतिष्ठा और गौरव जुड़ा हुआ है। यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप अपने ज्ञान और आचरण से इस प्रतिष्ठा को और ऊँचाई दें। साथ ही, आप पर अपने देश–प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का भी महान् दायित्व है।

मुझे आप सभी पर पूर्ण विश्वास है कि आप इन गरिमामयी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निभाएँगे।

मैं एक बार फिर आप सभी को हृदय से बधाई और ढेरों शुभकामनाएँ देता हूँ। आप अपनी शिक्षा का बेहतरीन उपयोग करें। मेरा शुभाशीष है कि आप अपने भावी प्रयासों में न केवल सफलता, बल्कि उत्कृष्टता के शिखर को प्राप्त करें।

धन्यवाद।
जय हिन्द! जय हिमाचल!

डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय,
नौणी, सोलन-173230, हिमाचल प्रदेश

14 वां दीक्षांत समारोह

बुधवार, 10 दिसंबर, 2025

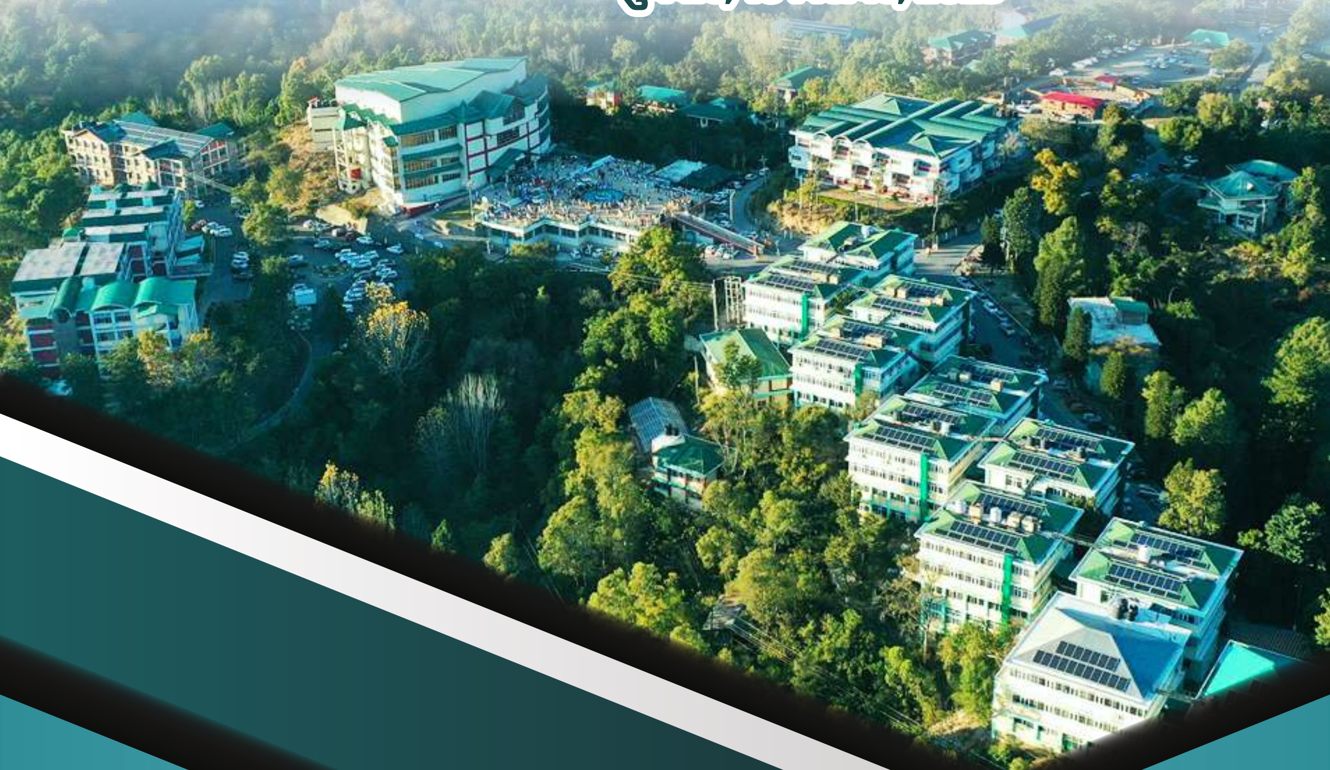

कार्यक्रम

डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय,
नौणी, सोलन-173230, हिमाचल प्रदेश

डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन-173230, हिमाचल प्रदेश

के

14वें दीक्षांत समारोह

का

विस्तृत कार्यक्रम

कार्यक्रम स्थलः डॉ एल एस नेगी सभागार

दिनांक : बुधवार, 10 दिसंबर, 2025

समय : 10:15 बजे प्रातः

कार्यक्रम

दिनांक : बुधवार, 10 दिसंबर, 2025

दीक्षांत समारोह (डॉ एल एस नेगी सभागार)	
10:30 बजे पुर्वाह्न	सभागार में शैक्षणिक शोभायात्रा का आगमन
10:35	दीप प्रज्जवलन एवं सरस्वती वंदना
10:40	कुलाधिपति द्वारा दीक्षांत समारोह के शुभारम्भ की घोषणा
10:42	कुलपति द्वारा स्वागत भाषण, विश्वविद्यालय के प्रतिवेदन की प्रस्तुति एवं उद्बोधन
11:00	कुलाधिपति द्वारा विद्या वाच्स्पति, स्नातकोत्तर एवं स्नातक उपाधि वितरण
01:05 बजे अपराह्न	स्वर्ण पदक वितरण
01:15	विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का विमोचन
01:20	विशिष्ट अतिथि द्वारा दीक्षांत अभिभाषण
01:40	कुलाधिपति का उद्बोधन
02:00	कुलसचिव द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव
02:05	कुलाधिपति द्वारा दीक्षांत समारोह के समापन की घोषणा
02:07	राष्ट्रीय गान
02:10	शैक्षणिक शोभायात्रा का प्रस्थान
02:15	भोजन

गणमान्य अतिथियों का स्वागत

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति, विशिष्ट अतिथि और अन्य गणमान्य सदस्यों का कुलपति और कुलसचिव द्वारा स्वागत।

परिचय

कुलपति महोदय शैक्षणिक शोभायात्रा के सदस्यों का परिचय कुलाधिपति और विशिष्ट अतिथि से करवाऐंगे।

शैक्षणिक शोभा यात्रा

कुलसचिव के नेतृत्व में शैक्षणिक शोभायात्रा का दो पंक्तियों में दीक्षांत सभागार में प्रवेश।

कुलसचिव

शिक्षण विभागों के विभागाध्यक्ष	(दो की पंक्ति में)
शैक्षणिक परिषद् के सदस्य	(दो की पंक्ति में)
प्रबंधन बोर्ड के सदस्य	(दो की पंक्ति में)
सीनेट के सदस्य	(दो की पंक्ति में)
कुलपति	
विशिष्ट अतिथि	
कुलाधिपति	
ए डी सी	

माननीय कुलाधिपति, एवं विशिष्ट अतिथि

शैक्षणिक शोभा यात्रा के दीक्षांत सभागार में प्रवेश करने पर सभी उपस्थित–वृन्द खड़े होंगे तथा तब तक खड़े रहेंगे जब तक शैक्षणिक शोभा यात्रा के सदस्य अपना–अपना स्थान ग्रहण नहीं कर लेते।

दीप प्रज्जवलन, एवं सरस्वती वंदना।

कुलपति का निवेदन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप से निवेदन करता हूँ कि आप 14वें दीक्षांत समारोह का शुभारम्भ करने की आज्ञा दें।

कुलाधिपति द्वारा घोषणा

मैं दीक्षांत समारोह के शुभारम्भ की घोषणा करता हूँ।

कुलपति द्वारा स्वागत भाषण, विश्वविद्यालय के प्रतिवेदन की प्रस्तुति, एवं उद्बोधन

कुलसचिव उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अपने–अपने स्थान पर उद्बोधन प्राप्त करने के लिए खड़े होने के लिए कहेंगे।

कुलसचिव का कथन

मैं उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अपने–अपने स्थान पर उद्बोधन प्राप्त करने हेतु खड़े होने का निवेदन करता हूँ।

मैं कुलपति महोदय से अनुरोध करता हूँ कि उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का उद्बोधन करें।

कुलपति महोदय उद्बोधन पढ़ेगें........................

तदोपरान्त कुलपति डिग्री प्राप्तकर्ताओं को उद्बोधित करेंगे। इसके पश्चात् उपाधि ग्रहणकर्ता अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

कुलपति का निवेदन
कुलाधिपति महोदय मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान करें।

कुलाधिपति का आदेश
उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत किया जाए।

उपाधियां प्रदान करना

विद्या वाच्स्पति
(औद्यानिकी महाविद्यालय) मुख्य परिसर, नौणी

औद्यानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता और उनकी अनुपस्थिति में उनके संकाय का वरिष्ठ सदस्य इन शब्दों में छात्रों को प्रस्तुत करेंगे। जब अधिष्ठाता सभी डिग्रीधारकों को कुलाधिपति के समक्ष प्रस्तुत करेंगे तो सभी उपाधिधारक खड़ें होंगे तथा तब तक अपनी–अपनी जगह पर खड़े रहेंगे जब तक उनको उपाधि से विभूषित न किया जाए।

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं औद्यानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विद्या वाच्स्पति की उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विद्या वाच्स्पति की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विद्या वाच्स्पति की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे।

डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं आप सब को विद्या वाच्स्पति की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे, उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विद्या वाच्स्पति की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विद्या वाच्स्पति की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों

को उनकी अनुपस्थिति में विद्या वाच्स्पति की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

विद्या वाच्स्पति
वानिकी
(वानिकी महाविद्यालय) मुख्य परिसर, नौणी

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विद्या वाच्स्पति की उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, वानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विद्या वाच्स्पति की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विद्या वाच्स्पति की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं आप सब को विद्या वाच्स्पति की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, वानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सके, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विद्या वाच्स्पति की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विद्या वाच्स्पति की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विद्या वाच्स्पति की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

विज्ञान निष्णात
(औद्यानिकी महाविद्यालय) मुख्य परिसर, नौणी

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं औद्यानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विज्ञान निष्णात की उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान निष्णात की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं आप सब को विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेगें। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान निष्णात की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

विज्ञान निष्णात
वानिकी
(वानिकी महाविद्यालय) मुख्य परिसर, नौणी

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विज्ञान निष्णात की उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, वानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान निष्णात की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं आप सब को विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे उपाधि ग्रहण करेंगे नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, वानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान निष्णात की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदेव योग्य सिद्ध हों।

विज्ञान निष्णात
(औद्यानिकी एवं वानिकी)
औद्यानिकी, एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, नेरी के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विज्ञान निष्णात (औद्यानिकी एवं वानिकी) की

उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान निष्णात औद्यानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान निष्णात औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं आप सब को विज्ञान निष्णात औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेगे उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान निष्णात औद्यानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इन्हें विज्ञान निष्णात औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान निष्णात वानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान निष्णात वानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं आप सब को विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे, उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सके, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान निष्णात वानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान निष्णात वानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान निष्णात की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

स्नातक

औद्यानिकी

(औद्यानिकी महाविद्यालय) मुख्य परिसर, नौणी

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं औद्यानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं आप सब को विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि

के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे, उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

स्नातक
वानिकी
(वानिकी महाविद्यालय) मुख्य परिसर, नौणी

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, वानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं आप सब को विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे उपाधि ग्रहण करेंगे नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, वानिकी महाविद्यालय का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

स्नातक
(औद्यानिकी, वानिकी एवं प्रौद्योगिकी, जैव–प्रौद्योगिकी)
औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, नेरी के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी, वानिकी एवं प्रौद्योगिकी, जैव–प्रौद्योगिकी की उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं आप सब को विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे उपाधि ग्रहण करेंगें, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगें।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं आप सब को विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे, उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन

कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी उनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन
कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि गहण्र करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये स्नातक प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं आप सब को विज्ञान स्नातक जैव प्रौद्योगिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे, उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर का कथन
कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये स्नातक प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें स्नातक प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अर्न्तगत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में स्नातक प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

स्नातक
(औद्यानिकी एवं वानिकी)
औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय गोहर (गुड़ाहरी), जिला मंडी

कुलसचिव का कथन

कुलाधिपति महोदय की अनुमति से मैं औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय गोहर (गुड़ाहरी), जिला मंडी के अधिष्ठाता से निवेदन करता हूँ कि वह विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी एवं वानिकी की उपाधि हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय गोहर (गुड़ाहरी), जिला मंडी का कथन
कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं आप सब को विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे, उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय गोहर (गुड़ाहरी), जिला मंडी का कथन
कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सकें, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) औद्यानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय गोहर (गुड़ाहरी), जिला मंडी का कथन
कुलाधिपति महोदय, मैं आप के समक्ष उपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान

स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों के साथ उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं आप सब को विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा आप को इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

तदोपरान्त कुलाधिपति प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग उपाधि प्रदान करेंगे। उपाधि ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी मंच की ओर आयेंगे उपाधि ग्रहण करेंगे, नत–मस्तक हों तथा लौट कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

अधिष्ठाता, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय गोहर (गुड़ाहरी), जिला मंडी का कथन
कुलाधिपति महोदय मैं आप के समक्ष अनुपस्थित उपाधि ग्रहण करने वाले (विद्यार्थियों के नाम) को जो उपस्थिति दर्ज नहीं करवा सके, को उनकी अनुपस्थिति में प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें परीक्षा उपरान्त प्रमाणित किया गया है कि ये विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि ग्रहण करने योग्य हैं। अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इन्हें विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित किया जाए।

तदोपरान्त कुलाधिपति इन शब्दों में उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधि से विभूषित करेंगे

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत मैं अनुपस्थित विद्यार्थियों को उनकी अनुपस्थिति में विज्ञान स्नातक (प्रावीण्य) वानिकी की उपाधि से विभूषित करता हूँ तथा उन्हें इस उपाधि के अनुरुप अधिकृत वस्त्र धारण करने का अधिकार देता हूँ और आदेश देता हूँ कि आप इस उपाधि के लिए सदैव योग्य सिद्ध हों।

नामावली पर हस्ताक्षर

विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक और अन्य स्वर्ण पदक वितरण

तदोपरान्त कुलसचिव कुलाधिपति से कहेंगे।
कुलाधिपति महोदय, मैं आपके समक्ष स्वर्ण पदक प्रदान करने हेतु विद्यार्थियों को प्रस्तुत करने की अनुमति चाहता हूँ तथा आप से अनुरोध करता हूँ कि छात्रों को स्वर्ण पदक वितरित करने की अनुकम्पा करें ।

कुलाधिपति का आदेश
उन्हें प्रस्तुत किया जाए

स्वर्ण पदक की सूची के नाम कुलसचिव पुकारेंगे। प्रत्येक नाम पुकारे जाने पर मंच की ओर बढ़ेंगे, स्वर्ण पदक, नत मस्तक हो तथा लौट कर अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का विमोचन

कुलपति महोदय विशिष्ट अतिथि का परिचय करवाएगें तथा अभिभाषण के लिए अनुरोध करेंगे।

विशिष्ट अतिथि का दीक्षांत भाषण (**Convocation Address**)

कुलपति महोदय कुलाधिपति को अनुरोध करेंगे कि वह दीक्षांत समारोह का अभिभाषण प्रस्तुत करें।

कुलाधिपति महोदय का उद्बोधन

कुलपति द्वारा कुलाधिपति, विशिष्ट अतिथि एवं अन्य अतिथि गणों को स्मृति चिन्ह से अभिनन्दन

कुलसचिव का विश्वविद्यालय की ओर से धन्यवाद प्रस्ताव।

तदोपरान्त कुलपति का कथन

कुलाधिपति महोदय, मैं आप से निवेदन करता हूँ कि 14वें दीक्षान्त समारोह समाप्ति की घोषणा करें।

कुलाधिपति द्वारा दीक्षान्त समारोह के समापन की घोषणा

मैं दीक्षान्त समारोह समाप्ति की घोषणा करता हूँ।

राष्ट्रगान

सभी उपस्थित जन खड़े होगें तथा जब तक कुलसचिव के नेतृत्व में शैक्षणिक शोभा यात्रा प्रतिलोम क्रम में प्रस्थान न कर जाये, खड़े रहेंगे।

शोभा यात्रा प्रतिलोम

कुल सचिव	
कुलाधिपति	
ए डी सी	
विशिष्ट अतिथि	
कुलपति	
सीनेट के सदस्य	(दो की पंक्ति में)
प्रबंधन मंडल के सदस्य	(दो की पंक्ति में)
शैक्षणिक परिषद	(दो की पंक्ति में)
शिक्षण विभागों के विभागाध्यक्ष	(दो की पंक्ति में)

डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय,
नौणी, सोलन-173230, हिमाचल प्रदेश